"संस्कार जागृति मिशन" को समर्पित

!! ओ३म् !!

अंक–02 वर्ष–02, मई 2020 (मासिक)

एक कदम संस्कारों की ओर

संस्कार जागृति

मासिक डिजीटल (ऑन लाइन) पत्रिका

नर सेवा ही नारायण सेवा है

कोविड–19 (कोरोना) वायरस

बचाव ही उचित उपचार है

स्वयं की एवं दूसरों की रक्षा करें।

संस्कार जागृति

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

(भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रही संस्था 'संस्कार जागृति मिशन' को समर्पित डिजीटल पत्रिका)

अंक-02 वर्ष-02, संवत्सर 2077 मई 2020 (मासिक)

मार्गदर्शक
आचार्य सत्यप्रिय आर्य
डा0 अर्चना प्रिय आर्य

संपादक
विवेक प्रिय आर्य

सृष्टि संवत्
1960853121

कार्यालय
संस्कार जागृति मिशन
52, ताराधाम कॉलोनी
नियर पुष्पांजलि द्वारिका
टाउनशिप (मथुरा) उ.प्र.

दूरभाष
09719910557
09719601088
09058860992

अनुक्रमणिका

लेख-कविता — पृष्ठ संख्या

वेदवाणी....................03
सम्पादकीय....................04
संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया....................05
कवि की कलम से....................06
मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है?....................07-08
ईमानदारी ही सबसे बड़ा धन है....................09
स्वास्थ्य चर्चा....................10
संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां....................11-15
विज्ञापन....................16

'संस्कार जागृति' पत्रिका प्राप्त करने के लिए

अपनी ई-मेल आईडी व व्हाट्सएप नम्बर हमें भेजें........09719910557

वेद वाणी

देव यज्ञशील से प्रेम करते हैं, आलसी से नहीं

वेद मंत्र

ओ३म् इच्छति देवाः सुन्वन्तं न स्वंप्राय स्पृहयन्ति। यन्ति प्रमादमतन्द्राः।।

-ऋ० ८।२।१८, अथर्व० २०।१८।३

ऋषि:-**मेधातिथिः काण्वः, प्रियमेधश्चाङ्गिरसः**। देवता-**इन्द्रः**।। छन्दः-**आर्षीगायत्री**।।

विनय

आलस्य मनुष्य बहुत बड़ा शत्रु है। हम जो नित्य पाप करते हैं उनमें से बहुतों का कारण मन की कुटिलता नहीं होता, किन्तु बहुत बार केवल हम आलस्य व सुस्ती के कारण पापी बनते हैं। एवं, बहुत-से अत्यन्त लाभकारी कार्यों से शुरू करके केवल आलस्य से हम उन्हें छोड़ देते हैं और आत्मकल्याण से वंचित हो जाते हैं, अतः आलस्य करने वाले लोग कभी परमात्मा के प्यारे नहीं हो सकते। या यूं कहना चाहिए कि परमात्मा के देव आलसियों को नहीं चाहते, क्योंकि आलसी लोग देवों के चलाये इस संसार यज्ञ में उनको सहयोग नहीं दे सकते। परमात्मा अपने इन देवों द्वारा जगत् में परिपूर्ण व्यवस्था रखते हैं-इन द्वारा पूरा नियमन, अनुशासन (Discipline) चला रहे हैं। भूल, गलती, अनुचितता, अपराध और पाप का ठीक नियमानुसार हमें दण्ड मिलता रहता है-बैचेनी, रोग, व्यथा, वेदना, क्लेश, मृत्यु आदि द्वारा हमें शिक्षा मिलती रहती है कि हम परमात्मा की आज्ञाओं का उल्लंघन न करें। ये देव इस अनुशासन को बिल्कुल अतन्द्र होकर-भूल-चूक से बिल्कुल रहित होकर-कर रहे हैं। ये सृष्टि के देव उस तत्वगुण के बने हुए हैं जो तमः को जीतकर रजः को अपने वश में किये हुए हैं, अतः आलस्य-प्रमाद करनेवाले तमोगुणी (तमोगुण से दबे हुए) मनुष्य देवों के प्यारे कैसे हो सकते हैं? अतः देव उन्हें प्रमादों के लिए बार-बार दण्ड दे-देकर, उन्हें पुनः-पुनः ठोकरें मारते हुए जगाते रहते हैं। परमात्मा के देव जो यह जगद्रूपी यज्ञ चला रहे हैं उसी के अनुसार-उसकी अनुकूलता में जो भी कुछ कर्म मनुष्य करता है वह सब यज्ञ-कर्म ही है। मनुष्य को इस यथार्थ-कर्म के सिवाय और कोई कर्म नहीं करना चाहिए। वही कर्म शुभ है, पुण्य है, यज्ञिय है, जिस द्वारा इस संसार के कुछ अच्छे, ऊंचे और पवित्र बनने में सहायता व सहयोग मिलता है। इस प्रकार का कोई भी कर्म करना संसार-यज्ञ के लिए सोम-रस का सेवन करना है। तनिक देखो-इन देवों के व्यारे लोगों को देखो-जो अपने प्रत्येक कर्म द्वारा संसार-यज्ञ के संवर्द्धक, पोषक इस सोम-रस को पैदा करते हुए और अपने इस कर्तव्य में सदा जाग्रत्, कटिबद्ध, संनद्ध रहते हुए देव-तुल्य जीवन बिता रहे हैं।

शब्दार्थ

देवाः- देव लोग **सुन्वन्तम्**- यज्ञकर्म करते हुए की **इच्छन्ति**- इच्छा करते हैं। **न स्वंप्राय स्पृहयन्ति**- निद्राशील, सुस्तों को नहीं चाहते। **अतन्द्राः**- स्वयं आलस्य रहित ये देव लोग **प्रमादम्**- गलती, भूल करनेवाले का **यन्ति**- नियमन करते हैं।

('आचार्य अभयदेव जी' की पुस्तक 'वैदिक विनय' से)

सम्पादकीय

बढ़ती बेराजगारी चिंता का विषय

विवेक प्रिय आर्य
(सम्पादक)

भारत एक युवा देश है और यहां युवाओं को अपनी सरकार से बहुत उम्मीदें हैं। बड़े शहरों में मेहनत करके आजीविका चला रहे लाखों कामगार अपने को असहाय समझते हुए विगत दिनों पलायन को मजबूर हुए। इन लोगों ने कोरोना संकट के इस कठिन काल को जिस तरह भुगता है अथवा भुगत रहे हैं उससे लगता है कि आने वाले कुछ वर्षों में उनकी वापसी थोड़ी कठिन ही होगी। इससे दो तरह की दिक्कतें स्वाभाविक रूप से होंगी एक तरफ तो बड़े शहरों में इन मजदूरों की कमी के कारण विभिन्न औद्योगिक इकाइयों को पूरी क्षमता में चला पाना मुश्किल होगा, वहीं गाँवो और कस्बो में वापस लौटी मजदूरों और कामगारों की बड़ी संख्या के लिए रोजगार और आजीविका के विकल्प सीमित होंगे।

कोविड-19 का दौर कई तरह के संकटों को गहरा बना रहा है। अभूतभूर्व संकटों की दस्तक की आहट अब सुनायी देने लगी है। एक तरफ जहां स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति को ले कर चिंताएं बढ़ गयी हैं। वहीं अर्थव्यवस्था के संकट के गहराने का खतरा साफ दिखने लगा है। कोरोना वायरस के पहले से भारत का आर्थिक तंत्र मंदी का शिकार था। विशेषज्ञ भी ठोस सुझाव नहीं दे पा रहे हैं कि इलाकों के संकट से किस तरह निपटा जाये। इस बीच भारत में बेरोजगारी खतरे के निशान से ऊपर जाने का संकेत देने लगा है। बेरोजगारी को ले कर सीएमआइई (Centre for Monitoring Indian Economy) के आंकड़े बेहद विश्वसनीय माने जाते हैं। जारी ताजा आंकडो के अनुसार बेरोजगारी की दर 23.4 प्रतिशत हो गयी है। नौकरियों का सीधे-सीधे 20 प्रतिशत का नुकसान हुआ है। और इतनी बड़ी तादाद में नौकरियों का खत्म होना किसी भी देश के लिए बड़ी बुरी खबर है। भारत में बेरोजगारी और शिक्षा दोनों की ही कमी है। देश में लगातार बढ़ती बेरोजगारी और शिक्षा पर एक सर्वे में चौकाने वाला खुलासा हुआ है। देश के युवाओं में सबसे बड़ी चिंता बेरोजगारी और शिक्षा को लेकर है। आज केन्द्र सरकार और राज्य सरकारों को मिलकर रोजगार को लेकर एक ठोस रणनीति बनाने की आवश्यकता है। क्योंकि युवा अगर बेराजगार रहेगा तो देश आगे तरक्की नहीं कर सकता है। मेरा अपना मानना है कि यदि वर्तमान में जारी सरकारी नौकरियों के वेतमान को कम कर रोजगार की संख्या बढ़ाई जाये तो वह एक अच्छा कदम साबित हो सकता है।

मेरा सरकारों से अनुरोध है कि रोजगार परक रणनीति बनाकर युवाओं रोजगार उपलब्ध करायें।

गतांक से आगे...

''संस्कारों की विज्ञान सम्मत प्रक्रिया''

लेखिका : डा. अर्चना प्रिय आर्य, अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

डा० अर्चना प्रिय आर्य
एम.ए. (संस्कृत/हिंदी)
बी.एड., पीएच.डी.

.....भोग में लिप्त होकर पुनः जन्म-मरण के चक्र में न बधें। देवताओं तक को स्थायी कर्म संग्रह हेतु (संस्कार संचय हेतु पृथ्वी पर आकर कर्म करना पडता है। क्योंकि उनकी योनि भोग योनि है। उनके पुष्प क्रमशः क्षय होते रहते हैं। वे पुष्पों का भोगकर उन्हें क्षीण कर रहे हैं। तथा पशु-पक्षी आदि पापों का भोगकर उन्हें क्षीण कर प्रगति कर रहे हैं। मनुष्य ठीक ऐसी स्थिति में है कि जो भी वह करेगा उसे वह तुरन्त बैंक अकाउण्ट में कमाए धन की भांति जमा मिलेगा। अर्नाल्ड टायनबी लिखते हैं - ''हमारे कर्म हमारे लिए एक नैतिक स्तर का बैंक अकाउण्ट बनाते हैं जिसमें क्रेडिट व डेबिट का सन्तुलन चलता रहता है। हर कर्म के साथ ताजी एन्ट्री होती रहती है व दोनों खाते हर बार रिन्यू होते रहते हैं। वह लिखते हैं कि बडी निराली व्यवस्था भारतीय ऋषियों की यह है, जिसमें व्यक्ति गणितीय सिद्धान्तानुसार शुभ कर्म करते हुए अपने लिए देवत्व का शुभ मार्ग चुन सकता है।'' सृष्टि में विचार से क्रिया-क्रिया का प्रतिफल क्रिया की स्मृति आदतें, संस्कारों का चित्त पर आरोपण यह खेल निरन्तर चल रहा है व कुशल शक्तियां व्यवस्थापिका की भूमिका निभाती हुई यह सारी प्रक्रिया सुनिश्चित कर रही है कि हर व्यक्ति अपने लिए कर्म करता हुआ लोक संग्रह करे। अवसर हर पुरषार्थी को मिलता है। प्रकृति की शक्तियां प्रारब्ध के वशीभूत हो अक्सर लाती हैं। तथा सुकर्मों द्वारा प्रभु की शक्ति से एवं ध्यान साधना द्वारा प्रारब्ध को बदला जा सकता है। एक स्वचालित सुनियोजित कर्म 'कर्म पुरुषार्थ' पर टिका सतत् चल रहा है।

यह सारा तत्वदर्शन यहां मनोविज्ञान का क, ख, ग समझाने के लिए नहीं, नहीं विद्वता झाडने के लिए अपितु सृष्टि की सुव्यवस्था के तन्त्र को समझाने के लिए प्रस्तुत किया गया है। संस्कार जो व्यक्तिगत है पूरी समष्टि को प्रभावित करते हैं। साथ ही यह भी सत्य है कि समाज के संस्कार व्यक्ति के मन को भी प्रभावित करते हैं। आज मूल समस्या क्या है? यही न कि समाज कुसंस्कारी हो गया है। व्यक्ति अपनी आस्थाएं नैतिक मूल्य खो बैठा है तो यहां यह भी समझना होगा कि यह सारी प्रक्रिया अचेतन मन की समष्टिगत प्रक्रियाओं से जन्मी है व इसका उपचार भी उसी सूक्ष्म स्तर पर उसी धरातल पर ही सम्भव है। आज जो मानसिक संत्रास, कुण्ठाएं, मनो-शारीरिक रोगों का बाहुल्य धरती पर है। वह भी कुसंस्कारों की ही प्रतिक्रिया है। धरती का इतिहास बदलना है, समाज का सारा ढांचा बदलना है, पूरे युग को बदलना है तो हमें समष्टिगत संस्कारों के परिशोधन हेतु सारे समाज में देव मानव बनने वाले तन्त्र को पैदा करना होगा। वस्तुतः व्यक्ति के मन का इतिहास ही धरती का इतिहास है। चंगेज खां, नेपोलियन, मुसोलिनी, हिटलर आदि के अचेतन मनों ने उनके अनुरुप दुनियां का इतिहास बना दिया। मानव की दुर्दशा का कारण ही अचेतन के संस्कारों की प्रतिक्रिया है। यदि धरती के भाग्यविधाता एक नहीं, अनेकों सुसंस्कारी देव मानव अगले दिनों बन जाएं तो वे भविष्य को आमूल-चूल बदल सकते हैं। स्वस्थ चिन्तन करने वाले व्यक्तियों को पैदा करने का तन्त्र हमें देव संस्कृति दिग्दर्शन करते हुए प्रदान करती है। देव संस्कृति ही हमें योग साधना के माध्यम से चित्त की वृत्तियों का निरोध कर संचित कुसंस्कारों को मिटाना व अनगढ को सुगढ़ बनाना सिखाती है। यही नहीं अपने प्रसुप्त सुसंस्कारों को जगाना भी अध्यात्म तत्व दर्शन के विभिन्न निर्धारणों के माध्यम हैं जिनका उल्लेख भारतीय संस्कृति करती है। संस्कारों का मानवी चेतना से गहरा सम्बन्ध है। इसके माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक परिष्कार की जन्म-जन्मान्तरों के कुसंस्कारों से पीछा छुडाया जाता है। महर्षि चरक के अनुसार - ''संस्कारो हि गुणान्तराधानमुच्यते''
अर्थात् वस्तु में नये गुणों को आधान करने का नाम संस्कार है। ....(शेष अगले अंक में)

कवि की कलम से

गीत : भारत तिमिर गर्त में झूल गया

रचियता :
कवि प्रज्जवल आर्य
ग्राम : ताल्हापुर (सहारनपुर)

वेद अनुकूल जो ईश्वर भक्ति, उसको ये जग भूल गया।
बेढंगे इन ढोंग से भारत, तिमिर गर्त में झूल गया ।।टेक।।

अहमदनगर जिले में भाई, शिरडी नामक धाम सुनो।
साईं बाबा कैसा भगवन, अब करतूतें सरेआम सुनो।।
खाना रोज मांस, मीन को, ये साईं का काम सुनो।
बीड़ी चिलम भांग और सुल्फा, नित करता धुंआधाम सुनो।।
साईंराम से नाम राम का, होता धूलमधूल गया।
बेढंगे इन ढोंग से भारत, तिमिर गर्त में झूल गया। ।१।।

आज भी कुछ मठ मन्दिर अंदर, बकरे, कटड़े कटते हैं।
लेकर मांस मवेशी का फिर, भोग वहां पर बंटते हैं।।
बुगले भगत उसी मांस पर, इस प्रकार झपटते हैं।
जैसे बगुले मछली ऊपर, ध्यान लगाकर डटते हैं।।
घटती है मानवता इससे, मूर्खपना फल फूल गया।
बेढंगे इन ढोंग से भारत, तिमिर गर्त में झूल गया।।२।।

निराकार, सब जगह समाया, कण कण में भगवान वही।
मूरत के बिन सन्ध्या करना, वेदों का भी गान यही।।
बुत को ईश मानकर पूजा, ईश्वर का अपमान यही।
तीर खड़ग ना चला सकेगी, जब मूरत में जान नहीं।।
बुत को रक्षक मान के हिन्दू, शस्त्र चलाने भूल गया।
बेढंगे इन ढोंग से भारत, तिमिर गर्त में झूल गया।।३।।

मरघट में से वापस आकर, दूषित गात बताते हैं।
हाथ लात और गात साफ कर, फिर वो भोजन खाते हैं।।
लेकिन वो हिन्दू कब्रो पर, बेशक चीर चढ़ाते हैं।
मुर्दा है उन कब्रो में भी, भूल वो इसको जाते हैं।।
ताल्हापुर का प्रज्जवल आर्य, ऋषिवर के अनुकूल गया।
बेढंगे इन ढोंग से भारत, तिमिर गर्त में झूल गया।।४।।

संस्कार वाणी

"कर्म करने से हार या जीत दोनों हाथ लगती हैं, लेकिन कर्म न करने से केवल हार ही हाथ लगती है।" – डा. अर्चना प्रिय आर्य जी (अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है?

लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य, संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन

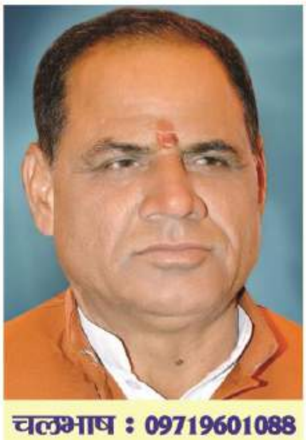

चलभाष : 09719601088

संसार की किसी भी वस्तु पर दृष्टि डालिये तो हमें लगेगा कि उसके निर्माण के पीछे- निर्माता का, रचियता का कोई उद्देश्य है। जब हर वस्तु की रचना सउद्देश्य है, जब साधारण से साधारण रचियता का उसकी रचना के पीछे कोई उद्देश्य है तो उस महान रचियता की सर्वश्रेष्ठ रचना हमारा यह मानव शरीर, यह मानव जीवन क्या निरूद्देश्य है? नहीं-नहीं, भाईयो और बहिनो। परमात्मा ने, सृष्टि के राजा ने हमारी रचना अपनी सृष्टि की सेवा के लिए की है। परमात्मा ने जहां सुंदर संसार बनाकर हमारे लिए दिया उसके साथ ही सृष्टि के आदि में चार ऋषियों के माध्यम से हमें वेदज्ञान की बुकलेट भी दी है। अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा इन चारों ऋषियों को ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद का ज्ञान दिया।

चारों वेदों में प्रथम ऋग्वेद है और ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में परमात्मा ने मनुष्य को उपदेश देते हुए कहा- हे मानव तुझे संसार में आकर क्या करना है?

''अग्निमीडे पुरोहितं यज्ञस्य देव मृत्युजम्''

अर्थात् परमात्मा ने सबसे पहले यह नहीं कहा कि तुझे क्या खाना है? तुझे क्या खाना है? बल्कि परमात्मा ने कहा कि तेरे जीवन का उद्देश्य क्या है, लक्ष्य क्या है? और उद्देश्य बताते हुए कहा कि मनुष्य जीवन का उद्देश्य धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चतुष्ट पुरूषार्थों की प्राप्ति करना है। इस प्रकार यदि मनुष्य जीवन प्राप्त करके इन चारों पुरूषार्थों की प्राप्ति नहीं करता है तो उसका जीवन निरर्थक है-बेकार है। इसलिए परमात्मा का मुख्य उपदेश मानव के लिए है- मोक्ष की, मुक्ति की, आनंद की प्राप्ति करना। और उसका उपाय बताया परमात्मा की स्तुति करना, प्रार्थना करना, उपासना करना।

प्रश्न है कि परमात्मा कैसा है? वह अग्निस्वरूप है, ज्ञानस्वरूप है, प्रकाशस्वरूप है, ज्योतिस्वरूप है, वह भूः भूर्वः स्वः है। ऋग्वेद की प्रथम ऋचा में परमेश्वर उपदेश कर रहा है कि मानव तुझे उपासना करनी है, तुझे मोक्ष की प्राप्ति करनी है। जन्म-मरण के बंधन से छूटकर आनंद को प्राप्त करना है। इसलिए आओ हम अपने जीवन के मूल उद्देश्यों को पहचानें। महर्षि दयानंद सरस्वती ने अपनी पुस्तक 'संस्कार विधि' में 16 संस्कारों का उल्लेख किया है। जिसमें एक संस्कार बच्चे के जन्म लेते ही होता है, जिसका नाम जातकर्म संस्कार ऋषि ने रखा है। जिसमें बालक का पिता बालक से कुछ प्रश्न करता है-

'को असि' 'कतमोअसि' 'कस्याअसि' 'कोमानासि'

अर्थात् तू कौन है, संसार में क्यों आया है, तुझे क्या करना है और तेरा नाम क्या है? हम सबको मिलकर इन प्रश्नों पर विचार करना चाहिए कि मैं कौन हूं, मैं क्या कर रहा हूं, मुझे क्या करना चाहिए था और इस संसार में मेरा कौन है? हम नित्यप्रति व्यवहार में आपसी बोलचाल में प्रायः कहते रहते हैं कि मेरा हाथ, मेरा पैर, मेरा सिर, मेरी आंखें ये कोई नहीं कहता कि मैं हाथ, मैं पैर या मैं दुख रहा हूं। आंखें दुःख रहीं हैं ये सभी कहते हैं ऐसा क्यों नहीं कहते क्योंकि मैं एक अलग सत्ता है वह आत्मा है। जो आत्मा इस शरीर में बैठा है उस आत्मा का विकास करना चाहिए। आज मनुष्य केवल शरीर के उत्थान विकास के ऊपर लगा हुआ है यही कारण है कि आत्मा के सुख के लिए, आत्मा की शांति के लिए स्थान-स्थान पर भटक रहा है। उसे जो सुख मिलना चाहिए था, उसे जो आनंद मिलना चाहिए था उसे नहीं मिल पाता है। इसलिए वेद भगवान कहता है - ''मनुरभव दैव्यंजनम्''

हे मनुष्य तू मनुष्य बन और उत्तम संतान प्राप्त कर।.. (शेष पृष्ठ 08 पर)

पेज 07 का शेष

मनुष्य जीवन का उद्देश्य क्या है? (लेखक : आचार्य सत्यप्रिय आर्य)

.....कर्म करने की क्षमता और कर्म करने का बल किसी योनि में है तो वह मनुष्य योनि है। सोचने की शक्ति, विचारने की शक्ति, पढ़ने की शक्ति, सुनने की शक्ति अगर किसी को मिली है तो केवल और केवल मनुष्य को ही मिली है। इसे पाकर यदि मनुष्य यह नहीं सोचता है तो वह मनुष्य नहीं है। नीतिकार ने बहुत सुंदर बात कही है-

येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मृत्युः लोके भुविवार भूता मनुष्य रूपेण मृगाश्चरन्ति।।

अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार में आकर विद्या को प्राप्त नहीं करता, तप नहीं करता, ज्ञान को प्राप्त नहीं करता और जिसने अपने शील को, चरित्र को नहीं बनाया है वह व्यक्ति मनुष्य के रूप में पशुवत् विचरण कर रहा है। इसलिए सदैव मानव चोले को प्राप्त करके सदैव विद्या को ग्रहण करना चाहिए। आचार्य यास्क मुनि कहते हैं- ''विद्याकस्मात्'' विद्या किसे कहते हैं? यास्क उत्तर देते हैं- ''सा विद्या या विमुक्तये'' विद्या वह साधन है जिससे व्यक्ति मुक्ति को प्राप्त करता है, आनन्द को प्राप्त करता है। वर्तमान में हमारी शिक्षा पद्धति में जो पढ़ाया जा रहा है वह विद्या नहीं है। महर्षि पतंजलि ने योग दर्शन में जिन पांच क्लेषों का उल्लेख किया है मनुष्य की सफलता में जो क्लेश बाधक हैं उनमें सबसे प्रथम जो बाधक तत्व है वह अविद्या है।

''अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, उपनिवेष पंच्चक्लेषाः।। (योग दर्शन)''

परमात्मा ने सृष्टि के प्रारंभ में इसलिए मनुष्य को 'स्व' को जानने के लिए, अपने उद्देश्य को जानने के लिए, अपने लक्ष्य को जानने के लिए वेद का ज्ञान दिया।

जैसे कोई व्यक्ति या कंपनी बाजार के अंदर अपनी तैयारी की हुई वस्तु को भेजती है और हम या आप कोई भी वस्तु खरीदकर लाते हैं तो उसके साथ कंपनी एक बुकलेट देती है। उदाहरण के तौर पर हम गाड़ी खरीदते हैं या अन्य कोई वस्तु खरीदते हैं तो उस बुकलेट या पुस्तिका को पढ़कर हम देख सकते हैं कि हम इस गाड़ी का प्रयोग कैसे करें? गाड़ी के गेयर कैसे डालने हैं, कब उसकी सर्विस होनी है, उसका ऑयल कितने समय बाद बदलना है, उसे कितनी गति देनी है आदि बातें हम उसके साथ आई बुकलेट से सीखते हैं। ऐसे ही और वस्तुओं का प्रयोग करना हम सीखते हैं। इसी प्रकार परमपिता परमात्मा ने बहुत सुंदर संसार बनाकर हमारे भोग के लिए, प्रयोग के लिए दिया है।

''ईशावास्य मिदं सर्व यत्किंच्च जगत्यामजगत्''

हम इस संसार का कैसे भोग करें? उसको समझने के लिए इस संसार के साथ इसकी बुकलेट दी। उस बुकलेट का ही नाम 'वेद' है। परमात्मा संसार तो बना देता परन्तु उसके साथ बुकलेट रूपी वेदज्ञान नहीं देता तो हमारे सामने गाय खड़ी होती परन्तु यह पता नहीं चलता कि यह गाय है और इसके दूध को कैसे निकाला जाए और कैसे इसका प्रयोग हो। हमारे सामने पेड़, पौधे, वनस्पतियां, अनेक प्रकार के फल व खनिज होते परन्तु हमें यह जानकारी नहीं होती कि इन वस्तुओं का प्रयोग हम कैसे करें। यह संसार हमारे लिए दुःखदायी हो जाता, निरर्थक हो जाता। इसलिए परमात्मा ने जहां सुंदर संसार बनाकर हमारे लिए दिया उसके साथ ही सृष्टि के आदि में चार ऋषियों के माध्यम से हमें वेदज्ञान की बुकलेट दी।...(शेष अगले अंक में)

संस्कार वाणी

''क्रोध और आंधी दोनों एक समान है। शांत होने पर ही पता चलता है कि कितना नुकसान हुआ है।''

- आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी (संरक्षक : संस्कार जागृति मिशन)

प्रेरक प्रसंग

ईमानदारी ही सबसे बड़ा धन है

वंदना प्रिय आर्य
एम.ए., एम.फिल. (संस्कृत)
उपाध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन

रामदास अपने गाँव के सबसे बड़े चोरों में से एक था। मुरारी रोजाना जेब में चाकू डालकर रात को लोगों के घर में चोरी करने जाता। पेशे से चोर था लेकिन हर इंसान चाहता है कि उसका बेटा अच्छे स्कूल में पढाई करे तो यही सोचकर बेटे का एडमिशन एक अच्छे पब्लिक स्कूल में करा दिया था।

रामदास का बेटा पढाई में बहुत होशियार था लेकिन पैसे के अभाव में 12 वीं कक्षा के बाद नहीं पढ़ पाया। अब कई जगह नौकरी के लिए भी अप्लाई किया लेकिन कोई उसे नौकरी पर नहीं रखता था। एक तो चोर का बेटा ऊपर से केवल 12 वीं पास तो कोई नौकरी पर नहीं रखता था। अब बेचारा बेरोजगार की तरह ही दिन रात घर पर ही पड़ा रहता। रामदास को बेटे की चिंता हुई तो सोचा कि क्यों ना इसे भी अपना काम ही सिखाया जाये। जैसे मैंने चोरी कर करके अपना गुजारा किया वैसे ये भी कर लेगा। यही सोचकर रामदास एक दिन बेटे को अपने साथ लेकर गया। रात का समय था दोनों चुपके चुपके एक इमारत में पहुंचे। इमारत में कई कमरे थे सभी कमरों में रौशनी थी देखकर लग रहा था कि किसी अमीर इंसान की हवेली है। रामदास अपने बेटे से बोला आज हम इस हवेली में चोरी करेंगे, मैंने यहाँ पहले भी कई बार चोरी की है और खूब माल भी मिलता है यहाँ। लेकिन बेटा लगातार हवेली के आगे लगी लाइट को ही देखे जा रहा था। रामदास बोला अब देर ना करो जल्दी अंदर चलो नहीं तो कोई देख लेगा। लेकिन बेटा अभी भी हवेली की रौशनी को निहार रहा था और वो करुण स्वर में बोला पिताजी मैं चोरी नहीं कर सकता। रामदास बोला तेरा दिमाग खराब है जल्दी अंदर चल। बेटा ने कहा कि पिताजी, जिसके यहाँ से हमने कई बार चोरी की है देखिये आज भी उसकी हवेली में रौशनी है और हमारे घर में आज भी अंधकार है। मेहनत और ईमानदारी की कमाई से उनका घर आज भी रौशन है और हमारे घर में पहले भी अंधकार था और आज भी। मैं भी ईमानदारी और मेहनत से कमाई करूँगा और उस कमाई के दीपक से मेरे घर में भी रौशनी होगी। मुझे ये जीवन में अंधकार भर देने वाला काम नहीं करना। रामदास की आँखों से आंसू निकल रहे थे। उसके बेटे की पढाई आज सार्थक होती दिख रही थी।

पाठको! बेईमानी और चोरी से इंसान क्षण भर तो सुखी रह सकता है लेकिन उसके जीवन में हमेशा के लिए पाप व अंधकार भर जाता है। अपने काम को मेहनत और ईमानदारी से करें। बेईमानी की कमाई से बने पकवान भी ईमानदारी की सुखी रोटी के आगे फीके हैं। कुछ ऐसा काम करें कि आप समाज में सर उठा के चल सकें।

ओजस्वी प्रवक्ता एवं मधुर गायिका
श्रद्धेया डा.अर्चना प्रिय आर्य जी
(अध्यक्ष : संस्कार जागृति मिशन)
की अमृतमयी वाणी में
मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम कथा, भगवती सीता चरित
यज्ञ कथा, राष्ट्र कथा एवं आर्य भजनोपदेश
कराने के लिए सम्पर्क करें : 09719910557, 09719601088

स्वास्थ्य चर्चा 'निम्न रक्तचाप' का घरेलु उपचार

आजकल की भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में ब्लडप्रेशर की शिकायत होना आम बात है। सामान्य तौर पर जब आप अचानक बेहद कमजोरी महसूस करें या चक्कर आने जैसे लक्षण निम्न रक्तचाप के हो सकते हैं, लेकिन प्रमुख रूप से थकान, डिप्रेशन, जी मचलाना, प्यास लगना, त्वचा में पीलापन, शरीर ठंडा पड़ जाना, आधी-अधूरी और तेज सांसें आना, छाती में दर्द, अनियमित धड़कनें, तेज बुखार, गर्दन का अकड़ जाना, अगर ज्यादा लंबे समय तक लो ब्लड प्रेशर की समस्या हो तो उल्टी और डायरिया भी हो सकती है, बेहोशी, अत्यधिक थकान, कुछ समय के लिए धुंधला या कुछ दिखाई न देना आदि निम्न रक्तचाप (बीपी लॉ) के प्रमुख लक्षण होते हैं। निम्न रक्तचाप के खतरे से बचने के लिए समय रहते सावधानियों को अपनाना बेहतर होता है। इसके लिए जीवन शैली और आहार में बदलाव लाना बहुत जरूरी होता है। आइये जानते हैं निम्न रक्तचाप के कुछ घरेलू उपाय-

नीति प्रिय आर्य

निम्न रक्तचाप के 10 घरेलु उपाय :-

1. निम्न रक्तचाप में ज्यादा नमक लें, नमक में सोडियम मौजूद होता है, जो ब्लड प्रेशर बढ़ाता है। कम ब्लड प्रेशर में एक गिलास पानी में 1 चम्मच नमक मिलाकर पीने से फायदा मिलता है।
2. बीपी कम करने के लिए कॉफी बहुत फायदेमंद होती है, इसके सेवन के लिए पहले यह जांच ले कि ब्लड प्रेशर कम ही हो। आपको रोजाना सुबह एक कप कॉफी बहुत लाभदायक होगी।
3. 50 ग्राम देशी चने व 10 ग्राम किशमिश को रात में 100 ग्राम पानी में किसी भी कांच के बर्तन में रख दें। सुबह चनों को किशमिश के साथ अच्छी तरह से चबा-चबाकर खाएं और पानी को पी लें। केवल किशमिश का प्रयोग भी कर सकते हैं।
4. रोजाना सुबह 3-4 तुलसी के पत्तों का सेवन करने से लो ब्लड प्रेशर को कंट्रोल किया जा सकता है।
5. लेमन जूस में हल्का सा नमक और चीनी डालकर पीने से लो बीपी में काफी फायदा होता है। इससे शरीर को एनर्जी तो मिलती ही है साथ ही लीवर भी सही काम करता है।
6. गाजर के 200 ग्राम रस में पालक का 50 कम ब्लडप्रेशर में गाजर भी आपके लिए फायदेमंद हो सकती है। इसके लिए लगभग 200 ग्राम गाजर के रस में एक चौथाई पालक का रस मिलकाकर पिएं। यह आपके लिए बेहद लाभदायक सिद्ध होगा ।
7. छाछ में नमक, भुना हुआ जीरा और हींग मिलाकर, इसका सेवन करते रहने से भी ब्लड प्रेशर नियंत्रित रहता है।
8. दालचीनी के पाउडर को प्रतिदिन गर्म पानी के साथ लेने से भी आपको इस समस्या में लाभ मिल सकता है, इसके लिए सुबह-शाम यह प्रयोग करें।
9. लो-बीपी के कारण अगर चक्कर आने की शिकायत हो, आंवले के रस में शहद मिलाकर खाने से बहुत जल्दी राहत मिलती है ।इसके अलावा आंवले का मुरब्बा भी ब्लडप्रेशर के रोगियों के लिए एक बेहतर विकल्प है।
10. अदरक के छोटे-छोटे टुकड़े करके, उनमें नींबू का रस और सेंधा नमक मिलाकर रख दें। अब इसे प्रतिदिन भोजन से पहले थोड़ी-थोड़ी मात्रा में खाते रहें। दिनभर में 3 से 4 बार भी इसका सेवन आप कर सकते हैं। ऐसा करने से रक्तचाप की समस्या कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाएगी।

(हालांकि ये सभी घरेलू उपचार हैं फिर भी डॉक्टर से परामर्श ले लेना बेहतर होगा)

26 अप्रैल 2020 | राजपथ मथुरा

लॉकडाउन प्रभावितों की सेवा में लगीं हैं डॉ. अर्चना

स्वंय भोजन बना कर रहीं वितरण

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। कोरोना संक्रमण महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों के लिए संस्कार जागृति मिशन द्वारा निरन्तर सेवा कार्य किया जा रहा है। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने नेतृत्व में चल रहे इस सेवा कार्य में गरीब, निर्धन, विकलांग, विधवा व असहायों की भूख की पीड़ा को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। मिशन के पदाधिकारियों व सदस्यों द्वारा निःशुल्क आटा, चावल, नमक, मसाला, चाय आदि राशन का सामान जरूरतमन्दों तक पहुंचाया जा रहा है। वहीं मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य द्वारा स्वंय खिचड़ी व पूड़ी सब्जी पकाकर भी असहाय लोगों में बांटा जा रहा है। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना ने बताया कि मिशन की टीम द्वारा यथासंभव खाद्य सामग्री व भोजन वितरण का कार्य आगे भी जारी रहेगा। उन्होंने बताया कि इस महामारी से बचने का उपाय भी लोगों को बताया जा रहा हैए जिसमें सोशल डिस्टेंस व बार.बार साबुन से हाथ धोने के लिए तथा घर और ही रहने की अपील भी की जा रही है। उन्होंने बताया कि मिशन की तरफ से साबुन का भी वितरण निरन्तर किया जा रहा है।

सेवा कार्य में मिशन के सचिव विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, डॉ. कपिल प्रताप सिंह आदि का विशेष योगदान रहा।

संस्कार जागृति मिशन के संरक्षक **आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी** व अध्यक्ष **डा.अर्चना प्रिय आर्य जी** द्वारा लिखित साहित्य, जोकि अभी केवल ऑनलाइन ही प्राप्त किया जा सकता है। भविष्य में इन्हें प्रकाशित कराने की योजना है। इसमें आप सभी अपने बुजर्गों की स्मृति में पुस्तक प्रकाशित करा कर के अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कोराना महामारी के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों को राशन सामग्री वितरण करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी।

कोराना महामारी के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों को राशन सामग्री वितरण करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी व अन्य पदाधिकारी।

कोराना महामारी के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों को राशन सामग्री वितरण करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी व अन्य पदाधिकारी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कोराना संक्रमण (कोविड-19) महामारी के आपातकाल के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित गरीब, मजदूर व जरूरतमंदों के लिए खाना तैयार करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

वैश्विक महामारी 'कोरोना' के आपातकाल के दौरान जरूरतंदों को खाना वितरण करते संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारीगण व आटा पैकेट तैयार करतीं अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी।

वैश्विक महामारी 'कोरोना' के आपातकाल के दौरान जरूरतंदों के लिए खिचड़ी तैयार करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी व वितरण करते डा.कपिल प्रताप सिंह जी व दीपक सारस्वत जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

कोराना महामारी (कोविड-19) के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित गरीब, मजदूर व जरूरतमंदों के लिए भोजन तैयार करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा. अर्चना प्रिय आर्य जी।

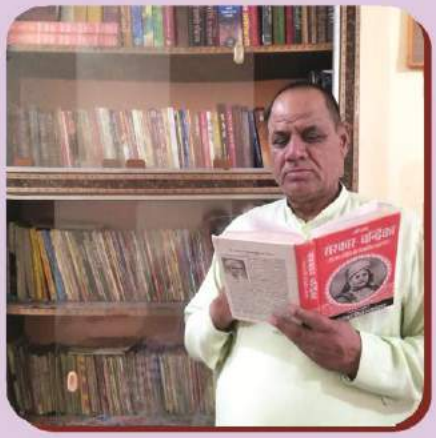

''विश्व पुस्तक दिवस'' के अवसर पर स्वाध्याय करतीं संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डा.अर्चना प्रिय आर्य जी, संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य जी व सचिव विवेक प्रिय आर्य जी।

वैश्विक महामारी कोरोना के दौरान लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों को भोजन के पैकेट वितरण करते संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारी डा. कपिल प्रताप सिंह जी व दीपक सारस्वत जी।

संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां मीडिया की नजरों में

23 अप्रैल 2020 राजपथ मथुरा

लॉकडाउन में जरूरतमंदों की निरन्तर सेवा कार्य के लिए डॉ. अर्चना प्रिय को कोरोना वॉरियर्स सम्मान

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। कोरोना संक्रमण महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंदों के लिए निरन्तर सेवा कार्य करने पर प्रधानमंत्री जनकल्याणकारी योजना प्रचार प्रसार अभियान (युवा प्रभाग), बृज प्रान्त द्वारा संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रिय आर्य को कोरोना वॉरियर्स सम्मान से नवाजा गया है। इसके लिए संस्था द्वारा सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया। मिशन की अध्यक्ष डॉ अर्चना प्रिय आर्य व संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह सम्मान मिशन के सभी पदाधिकारियों व सदस्यों को समर्पित है, हमारी टीम ही इसकी असली हकदार है जो निरन्तर जरूरतमन्दों की सेवा में लगी है। मिशन द्वारा आटा, चावल, चाय, नमक, साबुन, सेनेटाइजर, खिचड़ी, पूड़ी सब्जी आदि वस्तुओं का वितरण किया जा रहा है। आगे भी यथासंभव सेवा प्रकल्प चलता रहेगा। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जनकल्याणकारी योजना प्रचार प्रसार अभियान द्वारा दिया गया सम्मान हमारी संस्था के लिए गौरव की बात है। पदाधिकारियों व सदस्यों को इस सम्मान से प्रोत्साहन मिलेगा। सम्मान देने के लिए उन्होंने अभियान युवा प्रभाग के जिलाध्यक्ष वासु शर्मा, ब्रज प्रान्त क्षेत्रीय उपाध्यक्ष नवीन सोनी, जिला मंत्री रजनी शर्मा का आभार व्यक्त किया। सम्मान मिलने पर मिशन की उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, डॉं कपिल प्रताप सिंह आदि ने खुशी जताई।

छोटीसीबात | मथुरा | 14 अप्रैल 2020

कोरोना से लड़ाई — मदद को आगे बढ रहे हाथ

सेवा ही सबसे बड़ा धर्म

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन के सौजन्य से कोरोना संक्रमण महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित गरीब असहाय जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री का वितरण किया जा रहा है। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य के नेतृत्व में सदस्यों द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र में लोगों के बीच निःशुल्क चावल, आटा, बिस्कुट, साबुन आदि के पैकेट दिए गए। अध्यक्ष ने बताया कि जरूरतमंदों को दैनिक उपयोग में लायी जाने वाली सामग्री उपलब्ध करा रहे है। लॉकडाउन के बीच यह कार्य निरंतर जारी है और आगे भी मिशन द्वारा सेवा कार्य चलता रहेगा। आपदा के समय जरूरतमंदो की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि अन्न का दान महा दान होता है। भूखे को भोजन व प्यासे को पानी पिलाना हमारा कर्तव्य भी है और धर्म भी। सामग्री वितरण में दीपक सारस्वत, कपिल प्रताप सिंह आदि का सहयोग रहा।

हिन्दुस्तान आगरा • मंगलवार • 28 अप्रैल 2020 •

रिफाइनरी नगर क्षेत्र में किया भोजन वितरण

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा सोमवार को रिफाइनरी नगर क्षेत्र में लॉकडाउन से प्रभावित जरूरतमंद लोगों को भोजन के पैकिट वितरण किया गया। इस दौरान मिशन की टीम ने पचास पैकेट बांटे वहीं कोरोना से बचाव के लिए जागरूक किया। अध्यक्षा डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि मिशन द्वारा 12 दिन खाद्य सामग्री बांटी जा रही है। वहीं मास्क, गमछा लगाने व बार-बार हाथ धोने के लिए जागरूक किया जा रहा है।यथा संभव आगे भी मिशन द्वारा सेवा कार्य चलता रहेगा।

अमर उजाला
आगरा | मंगलवार, 28 अप्रैल 2020

टाउनशिप क्षेत्र में बांटे भोजन के पैकेट

टाउनशिप। संस्कार जागृति मिशन संस्था द्वारा लॉकडाउन के चलते रिफाइनरी नगर क्षेत्र में गरीब, असहायों एवं जरूरतमंदों को भोजन के पैकेट वितरित किए। अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि मिशन द्वारा 12 दिन से खाद्य सामग्री बांटी जा रही है। आगे भी भोजन के पैकेट बांटे जाएंगे। संवाद

16 अप्रैल 2020 राजपथ मथुरा

नेशनल एनजीओ फेडरेशन ने किया संस्कार जागृति मिशन को सम्मानित

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। कोरोना संक्रमण (कोविड-19) महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित गरीब असहाय जरूरतमंदों को निरन्तर निःशुल्क खाद्य सामग्री वितरण करने पर राष्ट्रीय एनजीओ महासंघ भारत द्वारा संस्कार जागृति मिशन को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया है। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य व संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने नेशनल एनजीओ फेडरेशन का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह हमारी संस्था के लिए गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि मिशन द्वारा जरूरतमंदों को निःशुल्क खाद्य सामग्री आटा, चावल, बिस्कुट, नमक का वितरण निरन्तर किया जा रहा है। आगे भी यह सेवा निरंतर चलती रहेगी। लोगों को घर में ही रहनेए सामाजिक दूरी व बार.बार साबुन से हाथ धोने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है, इसके लिए मिशन की ओर से निःशुल्क साबुन भी वितरित किए जा रहे हैं। नेशनल एनजीओ फेडरेशन द्वारा मिशन को सम्मानित करने पर उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, डॉ. कपिल प्रताप सिंह, सतीश शर्मा, नवीन आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 30 अप्रैल 2020

सहायता | जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संस्था पंकज महाराज के निर्देश पर नर सेवा नारायण सेवा के भाव से जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने जुटी

भोजन वितरण के साथ पढ़ा रहे नशा मुक्ति का पाठ

मदद को बढ़े हाथ

टाउनशिप क्षेत्र में खिचड़ी वितरित करते संस्कार जागृति मिशन के सदस्य • सौ. संस्कार जागृति मिशन

सं, मथुरा : कहते है ऊपर वाला भूखा जगाता जरूर है,लेकिन सुलाता नहीं। कान्हा की नगरी में लॉकडाउन के चलते जब मजदूरों पर रोजी-रोटी का संकट आया तो ब्रजवासियों सहित कई सामाजिक संगठन इस कहावत को चरितार्थ करने की राह पर निकल पड़े। इसके चलते कई सामाजिक लोग व संगठन जिले के अलग-अलग हिस्सों में राशन वितरण कर जरूरतमंदों की भूख मिटाने में लगे है।

जयगुरुदेव धर्म प्रचारक संस्था द्वारा पंकज महाराज के निर्देश पर नर सेवा नारायण सेवा के भाव से जरूरतमंदों को भोजन उपलब्ध कराने जुटी है। प्रवक्ता बाबूराम ने बताया कि संस्था के करीब दो सौ सेवादार भोजन वितरण कार्य में लगे हुए हैं। युवा सिंधी महिला मंडल की अध्यक्षा नीता नाथानी द्वारा कोरोना संक्रमण से बचाव के लिए जरूरतमंदों को बांटने के लिए कपड़े के मास्क घर पर ही तैयार किए जा रहे हैं। एडवोकेट अनीता चावला व ज्योति रावलानी भी सहयोग कर रही हैं। संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के नेतृत्व में पदाधिकारियों व सदस्यों ने रिफाइनरी नगर क्षेत्र में जरूरतमंदों को राशन सामग्री और खिचड़ी बांटी जा रही है। विवेक प्रिय आर्य, डॉ. कपिल प्रताप सिंह और दीपक सारस्वत सहयोग कर रहे हैं। कांग्रेस जिलाध्यक्ष दीपक चौधरी के नेतृत्व में धौली प्याऊ, भूतेश्वर, सौंख रोड, नवनीत नगर, नया नगला, बहादुरपुर, सदर बाजार, वृंदावन और कैलाश नगर के जरूरतमंदों को प्रतिदिन लगभग 1500 लोगों को राशन सामग्री बांटी जा रही है। इसमें श्याम सुंदर उपाध्याय बिट्टू भैया, अब्दुल जब्बार, शालू अग्रवाल, पवन यादव, विक्रम वाल्मीकि, मोहन सिंह, मनोज गौड़, राहुल अरोड़ा और सुनील उपाध्याय ने सहयोग किया।

औरंगाबाद श्री रामलीला कमेटी व हिंदू युवा सामाजिक संस्था द्वारा करीब दो सौ जरूरतमंदों के लिए भोजन सामग्री बांटी जा रही है। इसमें ताराचंद अग्रवाल, राजेश सैनी, लाला बाबू अग्रवाल, नंदलाल उपाध्याय, बालकिशन, अनुज चौधरी, डॉ. योगेश कुमार, संजय निषाद, राकेश अग्रवाल और योगेश चौधरी ने सहयोग किया।

महावन : गांव पचावर में प्रशासन द्वारा भेजी गई सामग्री का वितरण विधायक पूरन प्रकाश के नेतृत्व में हुआ। इस मौके पर एसडीएम हनुमान प्रसाद मौर्य, थाना प्रभारी शक्ति प्रकाश शर्मा, प्रधान मोहन सिंह ने सहयोग किया।

चौमुहां : गोविंद शरण आश्रम ट्रस्ट की ओर से बाबा रविनाथ ने सैकड़ों मजदूरों को भोजन कराया। साथ ही आश्रम में रात्रि विश्राम की भी व्यवस्था की जा रही है। इसमें अमित शर्मा, रवि शर्मा, सचिन शर्मा, मुन्ना लाल, चरण शर्मा व नेहरू सहयोग कर रहे हैं।

आज आगरा, 28 अप्रैल 2020

रिफाइनरी नगर क्षेत्र में बांटे भोजन के पैकेट

मथुरा। संस्कार जागृति मिशन द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र में लॉकडाउन से प्रभावित गरीब, असहाय, जरूरतमन्दों को भोजन की पैकिट वितरण की गईं। इस दौरान मिशन की टीम द्वारा पूड़ी व सब्जी की पचास पैकेट बांटी गयीं और कोरोना से बचने के लिए जागरूक किया। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि मिशन द्वारा पहले बारह दिन खाद्य सामग्री जरूरतमन्दों को दी गई थीं और अब पिछले आठ दिन से भोजन का वितरण निरन्तर जारी है, जिसमें खिचड़ी और पूड़ी सब्जी असहायों को दी जा रहीं हैं। इसके अलावा मुंह पर गमछा बांधने व बार बार हाथ धोने के लिए जागरूक करने का कार्य मिशन द्वारा किया जा रहा है और साबुन भी दिए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि यथासंभव आगे भी मिशन द्वारा सेवा कार्य चलता रहेगा।

आज आगरा, 17 अप्रैल 2020

नेशनल एनजीओ फेडरेशन ने किया संस्कार जागृति मिशन को सम्मानित

मथुरा। कोरोना संक्रमण (कोविड-19) महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित गरीब असहाय जरूरतमंदों को निरन्तर निःशुल्क खाद्य सामग्री वितरण करने पर राष्ट्रीय एनजीओ महासंघ भारत द्वारा संस्कार जागृति मिशन को सम्मान पत्र देकर सम्मानित किया गया है। मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य व संरक्षक आचार्य सत्यप्रिय आर्य ने नेशनल एनजीओ फेडरेशन का धन्यवाद ज्ञापित करते हुए कहा कि यह हमारी संस्था के लिए गौरव की बात है। उन्होंने बताया कि मिशन द्वारा जरूरतमंदों को निःशुल्क खाद्य सामग्री आटा, चावल, बिस्कुट, नमक का वितरण निरन्तर किया जा रहा है। आगे भी यह सेवा निरंतर चलती रहेगी। लोगों को घर में ही रहने, सामाजिक दूरी व बार-बार साबुन से हाथ धोने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है, इसके लिए मिशन की ओर से निःशुल्क साबुन भी वितरित किए जा रहे हैं। नेशनल एनजीओ फेडरेशन द्वारा मिशन को सम्मानित करने पर उपाध्यक्ष वंदना प्रिय आर्य, सचिव विवेक प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, डॉ.कपिल प्रताप सिंह, सतीश शर्मा, नवीन आदि ने हर्ष व्यक्त किया है।

14 अप्रैल 2020 राजपथ मथुरा

संस्कार जागृति मिशन द्वारा बांटी जा रही खाद्य सामग्री

मथुरा, (राजपथ मथुरा ब्यूरो)। संस्कार जागृति मिशन के सौजन्य से कोरोना संक्रमण महामारी के आपातकाल को लेकर लॉकडाउन से प्रभावित गरीब असहाय जरूरतमंदों को खाद्य सामग्री का वितरण किया जा रहा है। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य के नेतृत्व में सदस्यों द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र में लोगों के बीच निःशुल्क चावल, आटा, बिस्कुट, साबुन आदि के पैकेट दिए गए। अध्यक्ष डॉ. अर्चना ने बताया कि संस्कार जागृति मिशन के पदाधिकारी व सदस्य जरूरतमंदों को दैनिक उपयोग में लायी जाने वाली सामग्री उपलब्ध करा रहे है। लॉकडाउन के बीच यह कार्य निरंतर जारी है और आगे भी मिशन द्वारा सेवा कार्य चलता रहेगा। आपदा के समय जरूरतमंदो की सेवा करना सबसे बड़ा धर्म है। उन्होंने कहा कि अन्न का दान महा दान होता है। भूखे को भोजन व प्यासे को पानी पिलाना हमारा कर्तव्य भी है और धर्म भी। सामग्री वितरण में दीपक सारस्वत, कपिल प्रताप सिंह आदि का सहयोग रहा।

आज आगरा, 30 अप्रैल 2020

खिचड़ी बांट की जरूरतमन्दों की सेवा

मथुरा। कोरोना महामारी के आपातकाल के दौरान गरीब, असहाय व जरूरतमन्दों की संस्कार जागृति मिशन की अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य के नेतृत्व में पाधिकारियों व सदस्यों द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र अंतर्गत खिचड़ी का वितरण किया गया और कोरोना के बचाव के लिए जागरूक किया। डॉ.आर्य ने बताया कि नर सेवा ही नारायण सेवा है इसी भाव को लेकर मिशन द्वारा जरूरतमंदों के लिए पिछले एक माह से खाद्य सामग्री आटा, चावल, नमक व भोजन पूड़ी सब्जी, खिचड़ी, बिस्कुट आदि का वितरण निरन्तर किया जा रहा है। आगे भी यह सेवा जारी रहेगी। उन्होंने बताया कि लोगों को साबुन से हाथ धोने, सोशल डिस्टेंस व घर पर ही रहने के लिए जागरूक भी किया जा रहा है।

छोटीसीबात 27 अप्रैल 2020

रिफाइनरी नगर क्षेत्र में बांटे भोजन के पैकेट

मथुरा (छोटी सी बात)। संस्कार जागृति मिशन द्वारा रिफाइनरी नगर क्षेत्र में गरीब, असहाय, जरूरतमन्दों को भोजन की पैकेट बांटे गये और कोरोना से बचने के लिए जागरूक किया। मिशन की अध्यक्ष डॉ. अर्चना प्रिय आर्य ने बताया कि मिशन द्वारा पहले बारह दिन खाद्य सामग्री जरूरतमन्दों को दी गई थीं और अब पिछले आठ दिन से भोजन का वितरण निरन्तर जारी है, जिसमें खिचड़ी और पूड़ी सब्जी असहायों को दी जा रहीं हैं। इसके अलावा मुंह पर गमछा बांधने व बार बार हाथ धोने के लिए जागरूक करने का कार्य मिशन द्वारा किया जा रहा है और साबुन भी दिए जा रहे हैं।

दैनिक जागरण आगरा/मथुरा, 14 अप्रैल 2020

संस्कार जागृति मिशन द्वारा रिफाइनरी क्षेत्र में राशन सामग्री वितरित की गई। अध्यक्ष डॉ.अर्चना प्रिय आर्य, दीपक सारस्वत, कपिल प्रताप सिंह मौजूद रहे।

आरएसएस स्वयंसेवकों ने बाकलपुर, गिरधरपुर में राशन सामग्री वितरित की। विभाग प्रचारक

संस्कार जागृति मिशन

!! ओ३म् !!

''संस्काराद् द्विज उच्यते''

(संस्कारों से परिष्कृत मनुष्य ही द्विज कहलाते हैं)

संस्कार जागृति मिशन

एक कदम संस्कारों की ओर

'संस्कार जागृति मिशन' एक ऐसा प्रयास है जो भारतीय संस्कृति व संस्कारों को पुनः जागृत करने में अहम भूमिका निभा रहा है।

घरों में यज्ञ व बच्चों के संस्कार करायें

बच्चों के जन्मदिन, बुजर्गों की पुण्यतिथि व त्यौहारों पर अपने घरों पर दुनिया का सर्वश्रेष्ठ कर्म 'यज्ञ' करायें तथा अपने बच्चों के सभी संस्कार करा कर उन्हें संस्कारवान बनायें।

वैदिक रीति से संस्कार व यज्ञ करवाने के लिए सम्पर्क करें

सम्पर्क सूत्र : 09719910557, 09719601088, 09058860992, 08218692727

ई-मेल : sanskarjagratimission@gmail.com

SanskarJagratiMission

Sanskar Jagrati TV

धार्मिक खबर, भजन, प्रवचन, योग, संस्कार समागम तथा संस्कार जागृति मिशन की गतिविधियां

देखने को YouTube पर संस्कार जागृति टीवी चेनल को सबस्क्राइब करें।